फरीदाबाद

मजदूर समाचार

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा

नई सीरीज नम्बर 69 | मार्च 1994 | 1/-

इस अंक में

आनन्ददायक संघर्ष

मजदूरों ने अपने आन्दोलनों के दौरान संघर्ष के कई ऐसे तरीके निकाले हैं जो कि रोचक व मजेदार तथा कारगर होने के साथ-साथ समाज में एक नये माहौल का निर्माण भी करते हैं।

1980 के आरम्भ में आस्ट्रेलिया में टेलीफोन वरकरों ने अपनी डिमान्डों पर आन्दोलन के दौरान टेलीफोन इस्तेमाल का हिसाब रखने वाले कम्प्यूटर बन्द कर दिये। इससे लोगों को दूर-दूर तक फैले अपने मित्रों-प्रियजनों को फ्री ISD-STD फोन करने की सुविधा मिली। टेलीफोन वरकरों के आन्दोलन को व्यापक जन समर्थन मिला। मैनेजमेन्ट ने चुपचाप टेलीफोन वरकरों की डिमान्डें मान ली।

1987 में फ्रान्स में रेलवे वरकरों ने अपनी ताकत बढाने के लिये यात्रियों के बीच पर्चे बाँटे जिनमें यात्रियों का आह्वान किया कि वे टिकिट नहीं खरीदें और रेल से फ्री यात्रा करें।

स्पेन में बस और मेट्रो रेल के ड्राइवरों तथा कन्डक्टरों ने बसें तथा ट्रेनें सुचारू रूप से चलानी जारी रखी और यात्रियों से किराया लेने से इनकार कर दिया।

इटली में भी बस और मेट्रो रेल के ड्राइवरों तथा कन्डक्टरों ने बसें-ट्रेनें चलानी जारी रखी और यात्रियों से किराये लेने से इनकार कर दिया।

स्पेन और इटली में मजदूरों ने यह कदम 1987 में उठाये थे।

मार्च 1989 में दक्षिण कोरिया में रेलवे मजदूरों ने अपने आन्दोलन में एक कदम के तौर पर 25 लाख यात्रियों को मुफ्त रेल यात्रा करवाई।

1991 की गर्मियों में अमरीका में बार्ट रेल कम्पनी में मजदूरों के आन्दोलन के दौरान फ्रान्स-इटली-स्पेन के उदाहरण पर्चो में दिये गये। उन पर्चों में यात्रियों से यह भी अनुरोध किया गया कि बार्ट रेल कम्पनी में हड़ताल की स्थिति में यात्री अपनी-अपनी मैनेजमेन्ट से वेतन के साथ छुट्टी की डिमान्ड करें।

> जो पुल बनायेंगे
> वे अनिवार्यतः
> पीछे रह जायेंगे।
>
> सेनायें हो जायेंगी पार
> मारे जायेंगे रावण
> जयी होंगे राम;
> जो निर्माता रहे
> इतिहास में
> बन्दर कहलायेंगे।
>
> – अज्ञेय

मैनेजमेन्टों के तरीके

यूनान में रेलवे कम्पनी ने नोटिस जारी किया है कि कम्पनी के वरकरों को ऐसा कोई अधिकार नहीं है कि वे पब्लिक को रेलवे कम्पनी के बारे में जानकारी दे सकते हैं। यह बात कुछ वैसी ही है जैसे कि स्कूल में बच्चों को क्या पढाया जाता है तथा बच्चों के साथ स्कूल में कैसा व्यवहार किया जाता है उनकी जानकारी को स्कूल से बाहर जाने पर प्रिन्सीपल रोक लगाये। अपने हितों के लिये एक फैक्ट्री के मजदूर जब कदम उठाते हैं तब प्रभावकारी होने के लिये उन्हें अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों के समर्थन की अनिवार्य आवश्यकता होती है। फैक्ट्री से बाहर जानकारी जाने से रोकने के लिये मैनेजमेन्टों के ऐसे नोटिस मजदूरों द्वारा समर्थन जुटाने में बाधा खड़ी करने के औजार हैं। समाज में जानकारियों का हर स्तर पर व्यापक प्रसार मजदूरों के पक्ष में ही जा सकता है और मैनेजमेन्टों के हितों के खिलाफ है।

बड़े पैमाने पर छँटनी करना विश्व मन्डी में प्रतियोगी बने रहने के लिये कम्पनियों की एक आवश्यकता-सी बन गई है। इस सिलसिले में चीन में कोयला उद्योग में ही चार लाख मजदूरों को नौकरी से निकालना एजेन्डे पर है। ऐसे में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा हाल ही में स्वीकृत डाक्यूमेंट नम्बर सात कहता है : "फैक्ट्रियों, खदानों, तेल के कूओं और रिफाइनरियों, अन्य मध्यम व बड़े उद्योगों और सामरिक महत्व के सरकारी उद्यमों में कन्ट्रोल को बढाया जाये। रिफोर्म के इस कार्यक्रम को लागू करते वक्त खुफिया पुलिस और हथियारबन्द पुलिस के जाल को और कसा जाये, इसमें किसी प्रकार की ढील नहीं दी जाये।" खूब तान कर रखे थान में ब्लेड की हल्की चोट भी कपड़े को फाड़ सकती है।

विश्व मन्डी में प्रतियोगी बने रहने के लिये मजदूरों पर नियन्त्रण के वास्ते राष्ट्रीय वेतन नीति तथा वेतन निर्धारण, उत्पादन की शाखाओं में फेडरेशनों और मैनेजमेन्टों की एसोसियेशनों के बीच एग्रीमेन्टें, और फैक्ट्री के आधार पर यूनियन-मैनेजमेन्ट समझौतों का ताना-बाना एक जानी-पहचानी चीज बन गई है। इस सिलसिले में न्यूजीलैंड सरकार ने "प्रत्येक मजदूर को हर रोज बर्खास्तगी की आशंका के साथ काम आरम्भ करना चाहिये" के लिये पहली मई 91 को एक नया कानून लागू किया है। कानून बना दिया गया है कि हर मजदूर से अलग-अलग एग्रीमेन्ट करके उसे ठेके पर काम दिया जाये।

सर्बिया में हड़तालें

आज भाषा में सर्बिया-बोस्निया शब्द लोगों द्वारा एक-दूसरे के कत्ल के पर्यायवाची बन गये हैं। हकीकत में अन्य धारायें भी हैं। एक भिन्न दृष्टिकोण को स्थान प्रदान करती हड़तालें –

एक रेडियो स्टेशन के वरकरों ने 20 अक्टूबर 93 को हड़ताल आरम्भ की। स्थानीय प्रशासन ने स्ट्राइक के पहले दिन से ही हड़तालियों का दमन शुरू कर दिया। प्रशासन और सरकार के नियन्त्रण वाले रेडियो व टी वी स्टेशनों तथा अखबारों ने हड़ताल का जिक्र तक नहीं किया। स्वतंत्र रेडियो व टी वी स्टेशनों तथा अखबारों ने हड़ताली रेडियो वरकरों की भरपूर सहायता की। 'रेडियो पानचेवो' में वह स्ट्राइक 6 जनवरी 94 तक जारी रही।

कम वेतन और खराब वर्किंग कन्डीशनों तथा जनता की कीमत पर चन्द लोगों के धनवान बनने के खिलाफ क्रेलजेवो नगर के एक अस्पताल के 1200 वरकरों ने 29 नवम्बर 93 को हड़ताल शुरू की। यह स्ट्राइक 7 दिसम्बर को जारी थी। सरकारी प्रचारतन्त्र इस हड़ताल का भी जिक्र तक नहीं करता।

जमाज, इकारस जी ए ओ, टेलिओप्टिक और टेलिओप्टिक जिरोसकोपी फैक्ट्रियों के 6 हजार मजदूरों ने 6 दिसम्बर 93 को राजधानी बेलग्रेड में दो घन्टे ट्रैफिक जाम की। 7 दिसम्बर को ओबुचा, जीओमशीन, इन्सा, इम्पा और आटोमेटिका फैक्ट्रियों के 4 हजार मजदूर भी इस कार्रवाई में शामिल हो गये। दस हजार वरकरों ने 7 दिसम्बर को कई घन्टों तक बेलग्रेड की सड़कों को जाम कर दिया।

फौज की एक फैक्ट्री, जस्तावा नामेन्सकी प्रोइजवोदी के 300 मजदूरों ने 24 दिसम्बर 93 को हड़ताल शुरू की।

15 हजार रेलवे मजदूरों की 24 व 25 दिसम्बर 93 की हड़ताल असफल रही। सर्बिया सरकार ने यूनियन के सहयोग से स्ट्राइक को नाकामयाब किया।

शेष पेज दो पर

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद -121001 (यह जगह बाटा चौक के पास है)

ऊषा प्रोडक्ट्स रायपुर

रायपुर स्थित जवाहर नगर में एक दवाई का कारखाना है जिसका पुराना नाम ऊषा प्रोडक्ट्स है, वर्तमान नामकरण ट्रान्सफ्लेक्स हुआ है। लगभग 150 मजदूर वहाँ काम करते हैं। 20-25 वर्ष से वहाँ उत्पादन कार्य हो रहा है परन्तु वहाँ मजदूरों का शोषण उत्पादन की अपेक्षा दुगुना है।

1. वहाँ पर मजदूरों की भरती पर यह ध्यान रखा जाता है कि वे महिलायें हों ताकि कोई झंझट भविष्य में खड़ी न हो सके।

2. वहाँ शुरूआती वेतन बतौर 220-250 रुपये दिया जाता है जबकि सरकारी आँकड़ा (मध्य प्रदेश) 925 रुपये दर्शाता है।

3. इन सबके अलावा वहाँ मजदूरों को कोई भी सुविधा नहीं दी जाती है।

जब हक की बात उठी तो आज उन्हें कारखाने से बाहर कर दिया गया है। वापस लेने के लिये बहाना बना रहे हैं कि माल गोदाम में होने की वजह से प्रोडक्शन नहीं कर रहे हैं, जबकि इन सज्जनों की दूसरी फैक्ट्री में उत्पादन हो रहा है और उसकी सप्लाई भी हो रही है। आज मजदूर न्याय की गुहार के लिये संघर्ष कर रहे हैं।

–दुर्गा, रायपुर

वर्कशाप मजदूर की कलम से

आप पिछले पेपर में पढे कि काम है तो साहब लोग सिर पर चढ कर काम लेते हैं नहीं तो कान पकड़ कर गेट बाहर कर देते हैं।

मैक ट्रेडर्स में मात्र पाँच मजदूर हैं। अपने हक की माँग की तो देने की बात तो दूर रही, नौकरी से निकाले गये। हुआ ऐसा कि हमारे मजदूर भाई जब पेमेन्ट टाइम पर मिलनी चाहिये, ई एस आई कार्ड दिया जाये, हाजरी कार्ड दिया जाये या पक्के रजिस्टर पर हाजरी लगाई जाये, बोनस दिया जाये और प्रोविडेन्ट फन्ड जमा करवाया जाये, की बात की तो बेचारे नौकरी से ही हाथ धो बैठे। आज की सरकार और कानून भी वैसे-तैसे हैं कि अगर जरूरत पड़ने पर आदमी जाता भी है तो कोई सुनवाई नहीं होती। अगर किसी हालत में थोड़ी सुन भी लिये तो उनके पीछे भाग-दौड़ करते-करते आदमी थक जाता है और हार कर हिसाब ले लेता है। मजदूर के पिसने का मेन कारण हमारी सरकार और सरकारी कानून भी है।

कुछ वर्कशाप ऐसी भी हैं कि पाँच आदमी हैं और तीन शिफ्ट चलाई जाती हैं जबकि चलने के काबिल नहीं हैं। ओवर टाइम की एक चाय और एक मट्ठी मिलती है तथा पचास पैसे घन्टे मिलते हैं। दो घन्टे ओवर टाइम किया तो एक रूपया मिलेगा। क्या यह बात ठीक है?

– शेष अगले अंक में

मारूती कम्पनी

18 फरवरी को बाटा फाटक पर पर्चा बाँटते समय हमारी मुलाकात गुड़गाँव की मारूति फैक्ट्री के एक मजदूर से हुई। वरकर ने अपने हालात हमें बताये और फिर अन्य साथियों के साथ मिल कर डाक द्वारा लिख कर भेजे। वैसे, मारूति मैनेजमेन्ट उन मजदूरों को कम्पनी के वरकर मानने से इनकार करेगी क्योंकि वे आठ-नो साल से वहाँ कैजुअल हैं, परमानेन्ट नहीं।

60 ड्राइवर आठ-नो साल से मारूति में लगातार काम कर रहे हैं। मैनेजमेन्ट ने उन्हें कैजुअल ड्राइवर करार दिया है। 45 रुपये रोज पर काम शुरू करने वाले इन ड्राइवरों को आठ साल में इसमें एक पैसे की भी वृद्धि नहीं की गई है। मारूति कैजुअल ड्राइवरों को आज भी 45 रुपये रोज के हिसाब से मिलते हैं। 1985 के 45 रुपये और 1994 के 45 रुपये की तुलना के लिये इतना ही काफी होगा कि 1985 में न्यू टाउन से नई दिल्ली का रेल किराया चार रुपये था और आज यह 7 रुपये है (बजट का रेट अभी लागू नहीं हुआ है)। कैजुअल ड्राइवरों की ई एस आई कटती है पर ई एस आई कार्ड उन्हें नहीं दिये गये हैं। आठ-नो साल से कार्यरत मारूति कैजुअल ड्राइवरों को और कोई बैनेफिट भी नहीं मिलता।

बच्चे राह दिखा रहे हैं।

प्रति कक्षा छात्रों की अधिक संख्या के खिलाफ 400 अध्यापकों ने अमरीका में लॉस एंजेल्स नगर में हड़ताल की। अध्यापकों के समर्थन में 25 अक्टूबर 93 को दो हाई स्कूलों के छात्रों ने कक्षाओं का बहिष्कार किया।

सरकार द्वारा शिक्षा व्यय में कटौती के खिलाफ जनवरी 91 में हजारों स्कूली छात्रों ने यूनान में स्कूलों पर कब्जा किया। पुलिस से स्कूली छात्रों के टकराव हुये और पुलिस फायरिंग में 5 छात्र मारे गये। शिक्षा मन्त्री को इस्तीफा देना पड़ा।

यूनान पुलिस ने सैंकड़ों लड़के-लड़कियों पर विभिन्न किस्म के केस बनाये हैं। हर रोज दस-बीस छात्रों को थानों में ले जा कर पुलिस ने पूछताछ की।

नये शिक्षा मन्त्री ने समस्याओं को सूचीबद्ध करने के लिये अध्यापकों तथा छात्रों के बीच इश्तहार बाँटे। इश्तहारों को ले कर अध्यापक मंत्री के दफ्तर पर एकत्र हुये और वहाँ इश्तहार की होली जलाई।

सर्बिया में हड़तालें...

(पेज एक का बाकी)

मैग्नोहरोम फैक्ट्री के सात हजार मजदूरों ने 27 दिसम्बर 93 को क्रेलजेवो नगर में हड़ताल की।

कोयला खदानों और बिजली घरों के 60 हजार मजदूरों ने 29 दिसम्बर 93 को स्ट्राइक शुरू की। हड़ताल की वजह से दो दिनों तक सर्बिया में बिजली का अकाल पड़ गया। सरकार ने हड़ताल खत्म कराने के लिये अपने तरकश के सब तीर दागे। 31 दिसम्बर के बाद भी कोलुबारा कोयला खदान में हड़ताल जारी रही। 5 जनवरी 94 को सरकार ने कई हड़तालियों को गिरफ्तार कर लिया और उनका अता-पता आम लोगों में किसी को मालूम नहीं है।

फार्म 4 (नियम 8)

1	प्रकाशन स्थान	आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद
2	प्रकाशन अवधि	मासिक
3, 4,	मुद्रक, प्रकाशक व	शेर सिंह
5	सम्पादक	
	नागरिकता	भारतीय
	पता	मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद -121001
6	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों	शेर सिंह

मैं, शेर सिंह , एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उक्त विवरण सही है।

1-3-94 शेर सिंह (प्रकाशक)

इस अखबार को हम अधिक संख्या में छापना चाहते हैं ताकि बड़ी तादाद में मजदूर इसे पढ़ें और यह अखबार भी अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के लिये एक मंच बने। रुपये-पैसे की कमी हमारे लिये एक बाधा है। अगर आप इस अखबार को उपयोगी समझते हैं तो कृपया आर्थिक योगदान भी दें।

उलझनें पहचान-पत्र की

1940-45 के दौरान फौजी वर्दियों में विभिन्न झन्डे थामे लाखों लोग दुनियां के कोने-कोने को अपने बूटों तले रौंद रहे थे। उस दौरान आम लोग कभी एक तो कभी दूसरी फौज के चंगुल में फँसने से बचने के लिये उन रजिस्ट्रों को ढूँढ-ढूँढ कर जला रहे थे जिनमें लोगों को पहचान प्रदान करने वाली धर्म, जाति, नस्ल, क्षेत्र, देश, विचार, कार्य आदि वाली सूचनायें अंकित थी। पहचान की संस्कृति व राजनीति के खतरे उस समय पूरी स्पष्टता के साथ दिखाई दिये थे। ऐसा ही कुछ दहशत-भरा माहौल भारत में इमरजैन्सी के दौरान दिखाई दिया था।

14 मार्च 1991 को यूनान की संसद ने एक कानून बनाया जिसके अनुसार एक राष्ट्रीय कम्प्यूटर केन्द्र बनाया जायेगा जिसमें 12 वर्ष से अधिक आयु के सब नागरिकों के बारे में आयु, लिंग, जन्म-स्थान आदि सूचनायें एकत्र करके रखी जायेंगी। कम्प्यूटर केन्द्र की यह सूचनायें हर समय पुलिस, फौज, टैक्स विभाग, खुफिया विभाग, स्वास्थ्य विभाग आदि के लिये उपलब्ध रहेंगी। इस कानून से यूनान में आम नागरिक बहुत चिन्तित हैं क्योंकि यह कानून आम नागरिक के जीवन में सरकार की दखलन्दाजी को बढायेगा। इस कानून के कारगर विरोध के लिये लोग तौर-तरीकों पर विचार कर रहे हैं और संगठित हो रहे हैं।

हाल ही में भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त मिस्टर शेषन ने यूनान जैसा ही नागरिकों के बारे में सूचना बैंक भारत में बनाने का अभियान आरम्भ किया है। विगत के अनुभव के दृष्टिगत फोटो लगे पहचान-पत्रों में निहित खतरों को देखने की आवश्यकता नहीं है क्या?

नई टेक्नोलॉजी

फरीदाबाद में जगह-जगह ISD-STD और FAX के बूथ नजर आते हैं। टेलीफोन के जरिये हम दूर-दराज बैठे लोगों से मिनटों में बात कर सकते हैं और फैक्स के जरिये हजारों मील दूर मिनटों में लिखित सामग्री हूबहू रूप में पहुँचा सकते हैं। आज यह सब शहरों में सामान्य चीजें हैं।

सैटेलाइटों ने टी वी की पहुँच को बहुत गति व व्यापकता प्रदान की है। हाल ही में कलकत्ता के पास एक जूट मिल पर मजदूरों का कब्जा बी बी सी की न्यूज का हिस्सा बन कर 53 देशों में टी वी पर देखा गया।

सूचनाओं के आदान-प्रदान पर नियन्त्रण शक्ति तथा सत्ता होने के लिये एक अनिवार्य आवश्यकता होता है। सूचनाओं के आदान-प्रदान ने आज एक उद्योग का रूप ग्रहण कर लिया है जिसमें लाखों वरकर काम करते हैं। सूचनायें इन लाखों मजदूरों की नजरों से हो कर गुजरती हैं। यह हालात सूचनाओं पर नियन्त्रण के जरिये शक्ति व सत्ता को बनाये रखने पर अधिकाधिक प्रश्नों को जन्म देते हैं और मजदूरों द्वारा शक्ति व सत्ता को सशक्त चुनौती देना सम्भव बनाते हैं।

9 दिसम्बर 93 की वॉल स्ट्रीट जरनल में "कम्प्यूटरों का ताना-बाना कार्यस्थल संस्कृति की सीढ़ी-नुमा प्रकृति को छीज रहा है" शीर्षक से एक लेख है। अमरीका में फैल रहे कम्प्यूटरों के जाल को आफिस वरकर विभिन्न तरीकों से अपने हित में इस्तेमाल कर रहे हैं। कम्प्यूटरीकरण की पहली लहर ने जहाँ वरकरों को अलग-अलग खोखों में बन्द करके अलग-थलग कर दिया था वहीं कम्प्यूटरीकरण की दूसरी लहर, जिसमें आफिसों के अन्दर कम्प्यूटरों का ताना-बाना विस्तृत रूप में फैला है, इसने मजदूरों द्वारा एक-दूसरे को अपनी परेशानी-तकलीफों से अवगत कराना आसान कर दिया है। साथ ही, कम्प्यूटरों का घना होता यह ताना-बाना वरकरों के हाथों से हो कर सूचनाओं के गुजरने की वजह से मैनेजमेन्ट की अपने बीच की सूचनाओं को भी मजदूरों को उपलब्ध करवाता है।

जेलों के अन्दर संघर्ष

नशाखोरी के आरोप में जेल में बन्द 82 कैदियों द्वारा नशा त्यागने के लिये चिकित्सा कार्यक्रम में शामिल होने के बावजूद यूनान में जेल अधिकारियों ने उन्हें एक जेल से दूसरी जेल में ट्रान्सफर का हुक्म सुनाया। इस पर उन 82 कैदियों ने भूख हड़ताल कर दी। जेल अधिकारियों ने तत्काल उनके ट्रान्सफर आदेश वापस ले लिये। यह घटना 26 फरवरी 91 की है।

शोट्टस जेल स्कॉटलैंड में जेल अधिकारियों ने नियम बनाया कि मुलाकात के लिये आने वालों को नँगा करके तलाशी लेने के बाद ही कैदियों से मिलने दिया जायेगा। इस पर 8 जून 93 को 105 कैदियों ने जेल के हाल पर कब्जा कर लिया और दीवारों को जेल अधिकारियों के कार्टूनों से पाट दिया।

6 दिसम्बर 93 को इंग्लैंड में वाइमोट जेल में कैदियों ने बगावत कर दी थी।

कुछ समय पहले बंगलादेश में कैदियों की बगावत को कुचलने के लिये पुलिस ने जेलों के अन्दर फायरिंग की थी।

"जीवन-भर मैं घुटनों के बल जिन्दा रहने अथवा सिर उठा कर मरने के बीच झूलता रहा हूँ। समय आ गया है कि हम सिर उठा कर जियें।" यह शब्द जेम्स कार के हैं जो अमरीकी जेलों में कैद काटते-काटते बागी बने। उन्होंने विभिन्न जेलों के अन्दर जेल नियमों तथा अधिकारियों के व्यवहार के खिलाफ जुझारू संघर्ष किये थे।

पांच-छह अरब लोगों के हाथों में अर्थपूर्ण भविष्य की कुंजी है – पांच-छह अरब के सचेत सामुहिक हाथों में। मजदूर पक्ष के निर्माण के लिये आवश्यक सचेत सामुहिक एकता में योगदान के उद्देश्य से हम यह अखबार प्रकाशित करते हैं।

समाचार सार

यूनियन के सुधार के लिये न्यू डाइरेक्शन्स (नई दिशायें) नाम का एक ग्रुप अमरीका स्थित एक बड़ी यूनियन युनाइटेड आटो वरकर्स में बना। दो-तीन साल तक काफी सक्रियता से काम करने के बाद 13 नवम्बर 93 को हुये ग्रुप के सम्मेलन में इस सुधार ग्रुप ने अपने को भंग कर दिया। सम्मेलन में ग्रुप के राष्ट्रीय संचालक जेरी टकर ने कहा, "आम मजदूर न्यू डाइरेक्शन्स ग्रुप के पास नहीं आ रहे क्योंकि उनकी दृष्टि में यूनियन अर्थहीन है। जो चीज बेमतलब की है उसमें कोई सुधार करे ही क्यों?"

कार्यस्थल दुर्घटनाओ में प्रति 1000 में 36 मजदूर घायल हुये। यह 1991 में तुर्की सम्बन्धी आँकड़े हैं। घायलों में से 1631 मजदूरों की मृत्यु हो गई और 3669 मजदूर कार्य करने में स्थाई तौर पर अक्षम हो गये।

कोयला खदान के धँस जाने से 5 मार्च 94 को 6 मजदूरों की मृत्यु हो गई। यह दुर्घटना भोपाल से 680 किलोमीटर दूर कोटमा (पश्चिम) कोयला खदान में हुई।

बीस हजार बेरोजगारों ने 19-20 अक्टूबर 93 को अमरीका के डेट्रोयट नगर में पोस्ट ऑफिस में नौकरी के लिये लाइन लगाई।

"फैक्ट्रियाँ मजदूरों को सौंपी जायें" के नारे लगा रहे पाँच-छह सौ मजदूर बन्दरगाह नगर गदान्सक में पहली मई 93 को मीटिंग कर रहे थे। पोलैंड पुलिस ने हमला करके मीटिंग भंग की।

लोगों के सामुहिक कदम

चार हजार मजदूर परिवारों ने जून 93 में सामुहिक कदम उठा कर मैक्सिको शहर स्थित अपनी वस्ती में पानी के रेट में चालीस परसैन्ट की कटौती करवाई। सभाओं में खुले विचार-विमर्श द्वारा इन परिवारों ने आन्दोलन की रूपरेखा तय की थी और संघर्ष का संचालन स्वयं के हाथों में रखा था।

सार्वजनिक स्थल को सब लोगों के स्वतन्त्र इस्तेमाल के लिये खुला रखने और उसका नियन्त्रण सार्वजनिक हाथों में बनाये रखने के वास्ते आस्ट्रेलिया स्थित कालिनवुड नगर में बेरोजगार लोगों और उनके समर्थकों ने एक रैन बसेरे पर कब्जा किया। पुलिस से टकराव मोल ले कर लोगों ने रैन बसेरे को तब तक कब्जे में रखा जब तक कि स्थानीय प्रशासन रैन बसेरे को उसे प्रयोग करने वालों के हवाले करने को राजी नहीं हुआ।

पाँच वर्ष से कम आयु वाले बच्चों की दो नर्सरी बन्द करने के नोटिसों के विरोध में बच्चों के माता-पिताओं और नर्सरी स्टाफ ने लन्दन के इसलिंगटन क्षेत्र की उन दो नर्सरियों पर 5 मई 93 को कब्जा कर लिया।

कूड़ा-कचरा डालने के लिये वस्ती के इर्द-गिर्द के स्थान को निर्धारित करने के सरकार के फैसले के खिलाफ यूनान के अवलोना कस्बे के साढे चार हजार वाशिन्दों ने 14 अप्रैल 93 को एक राष्ट्रीय राजमार्ग को कई घन्टों तक जाम कर दिया।

जे वी इलेक्ट्रोनिक्स

प्लाट नम्बर 163-164 सैक्टर 24 स्थित जे वी इलेक्ट्रोनिक्स में कैपेसिटर बनते हैं। 1981 में इस फैक्ट्री में 450 महिला मजदूर काम करती थी और आन्दोलनरत मजदूरों पर उस समय पुलिस ने लाठी चार्ज किया था। आज जे वी इलेक्ट्रोनिक्स में 120 वरकर हैं जिनमें 115 महिलायें हैं और 5 पुरूष हैं। वैसे, स्टाफ के नाम से 100 और महिलायें व पुरूष फैक्ट्री में कार्यरत हैं – अधिकतर स्टाफ वाले वरकर से प्रोमोट हुये हैं और जे वी इलेक्ट्रोनिक्स वरकरों के अनुसार हर लीडर का मेन मकसद प्रोमोशन ले कर स्टाफ में जाना होता है। 1989 में एक दिन रात साढे दस बजे तक महिलायें फैक्ट्री के अन्दर धरने पर बैठी रही और मैनेजमेन्ट द्वारा लिखित में माफी माँगने पर ही धरने से उठी – लीडरों ने वह माफीनामा बाद में 700 रुपये में मैनेजमेन्ट को दे दिया।

फैक्ट्री में बहुत-ही खराब वर्किंग कन्डीशन की वजह से कई महिलायें बीमार रहती हैं और मैनेजमेंट बीमार वरकरों को कुछ ज्यादा ही परेशान करती है। एक जगह बहुत-ही खराब केमिकल इस्तेमाल की जाती है। उससे गले में खारिश, चक्कर आना, खून की उल्टी और शरीर सूख जाता है। वरकरों ने इसकी शिकायत सरकारी विभागों को भी की है पर मामला बार-बार रफा-दफा कर दिया जाता है। जहाँ वह केमिकल इस्तेमाल होती है वहाँ आठ-दस वरकर लगते हैं और जे वी इलेक्ट्रोनिक्स मैनेजमेन्ट क्रूरता व चालाकी से वहाँ परमानेन्ट की बजाय कैजुअल वरकर लगाती है। कैजुअल वरकरों के तौर पर भी मैनेजमेन्ट वहाँ लड़कियों को लगाती है, महिलाओं को नहीं। कुछ लड़कियाँ तो हफ्ता-दस दिन में ही छोड़ जाती हैं, जो मजबूरी में काम करती रहती हैं वे भी तीन महीनों में सूख कर काँटे जैसी हो जाती हैं। और फिर मैनेजमेन्ट उन्हें निकाल कर नई लड़कियों की भरती कर लेती है। मजदूरों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रही जे वी इलेक्ट्रोनिक्स मैनेजमेन्ट से कैसे निपटा जाये? कौनसी केमिकल वहाँ इस्तेमाल होती है?

मजदूरों की एक जीत

फ्लिन्ट गारमेन्ट फैक्ट्री ढाका में 250 वरकर काम करते हैं जिनमें से 230 महिला मजदूर हैं। वेतन में देरी इस फैक्ट्री के वरकरों के लिये एक बड़ी समस्या है। तीन महीनों के वेतन और पाँच महीनों के ओवरटाइम का भुगतान नहीं होने पर 27 दिसम्बर 93 को मजदूरों ने आवाज उठाई। मैनेजमेंट के इशारे पर गुन्डों ने वरकरों पर हमला किया। दस मजदूर घायल हुये, खदीजा खातून को इलाज के लिये ढाका मेडिकल कालेज अस्पताल में भरती कराना पड़ा। वरकरों ने मोती झील थाना घेर लिया जिस पर बंगलादेश पुलिस को केस दर्ज करके 28 दिसम्बर को दो हमलावरों को गिरफ्तार करना पड़ा।

साथ ही, बकाया वेतन व ओवरटाइम के भुगतान तथा गुन्डागर्दी के खिलाफ मजदूरों ने हड़ताल आरम्भ कर दी और फ्लिन्ट गारमेन्ट फैक्ट्री गेट को घेर कर धरने पर बैठ गये। मजदूरों ने डिप्टी लेबर इन्सपैक्टर को लिखित में कम्पलेन्ट की और उसकी प्रतियाँ लेबर मिनिस्ट्री, पुलिस कमिश्नर, गारमेन्ट ओनर्स एसोसियेशन आदि को भेजी। 29 दिसम्बर को फ्लिन्ट गारमेन्ट के हड़ताली वरकरों ने लेबर डिपार्टमेंट का घेराव किया और फौरन कार्रवाई डिमान्ड की। लेबर डिपार्टमेंट ने 30 दिसम्बर को त्रिपक्षीय मीटिंग निर्धारित की।

30 दिसम्बर की त्रिपक्षीय वार्ता में कोई समझौता नहीं हुआ। 30 दिसम्बर को ही फ्लिन्ट गारमेन्ट वरकरों ने ढाका शहर में जलूस निकाला। 31 दिसम्बर को मजदूरों ने फैक्ट्री गेट पर मीटिंग की।

उधर 29 दिसम्बर को फ्लिन्ट गारमेन्ट मैनेजमेन्ट ने मजदूरों के खिलाफ थाने में केस दर्ज करवाया। पहली जनवरी 94 को मैनेजमेन्ट ने अदालत में जा कर कहा कि कुछ शरारती तत्वों ने फैक्ट्री को घेर रखा है जिस वजह से समय पर माल का निर्यात नहीं हो पाया है। अदालत ने पुलिस को आदेश दिया कि वह फैक्ट्री से माल निकालने में मैनेजमेन्ट की मदद करे। 2 जनवरी को सुबह पुलिस दल फ्लिन्ट गारमेन्ट फैक्ट्री के गेट पर पहुँचा और पुलिस ने फैक्ट्री से माल निकलवाने की कोशिश की। मजदूरों ने पुलिस का विरोध किया। महिला मजदूर फैक्ट्री गेट के आगे लेट गई। अदालत का आदेश लागू करवाये बिना पुलिस चली गई।

पहली जनवरी 94 की त्रिपक्षीय वार्ता में भी कोई नतीजा नहीं निकला। पुलिस कार्रवाई की असफलता के बाद 2 जनवरी को तीसरी त्रिपक्षीय वार्ता हुई और इसमें समझौता हो गया। बकाया वेतन व ओवर टाइम को चार किस्तों में देना तय हुआ। घायल मजदूरों का इलाज मैनेजमेन्ट के खर्च पर होगा।

फरीदाबाद में

डेल्टन केबल्स में 28 जनवरी से 17 फरवरी तक तालाबन्दी रही। फैक्ट्री गेट के सामने से गुजरने पर काले झन्डे और दीवार पर मैनेजमेन्ट द्वारा थोक में चिपकाई चार्ज शीटों को देखने पर ही फैक्ट्री में कुछ गड़बड़ है का पता लग सकता था। पर्चे छाप कर अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों को हालात की जानकारी देना क्या डेल्टन केबल्स के मजदूरों के पक्ष को मजबूत नहीं करता? फैक्ट्री की चारदीवारी में मामले का सिकुड़ कर - सिमट कर रफा-दफा हो जाना क्या मैनेजमेन्ट के पक्ष में नहीं जाता?

लार्सन एन्ड टूब्रो में 14 अप्रैल 93 को मैनेजमेन्ट द्वारा की गई लॉक आउट मार्च 94 के आरम्भ में भी जारी है।

हिन्दुस्तान वैक्यूम ग्लास में 15 सितम्बर 93 को मैनेजमेन्ट द्वारा की गई तालाबन्दी मार्च 94 के शुरू में भी जारी है।

मैटल बॉक्स में 15 जनवरी 94 को मैनेजमेन्ट द्वारा की गई लॉक आउट मार्च के आरम्भ में जारी है।

गैलेक्सी इंजिनियरिंग के मजदूर फैक्ट्री गेट पर तम्बू तान कर बैठे हैं।

रेमिंगटन रैन्ड में चौंकाने वाली खामोशी है।

ब्रॉन दवाई फैक्ट्री में प्रोडक्शन के गति पकड़ने के साथ ही मजदूरों की हलचल आरम्भ हो गई है।

एस्कोर्ट्स में धकाधक ओवर स्टे और लटकी एग्रीमेन्ट के बीच क्या रिश्ता है? मंडी में माल नहीं उठ रहा की चर्चायें और ओवर स्टे का मतलब क्या है? फच्चर-फाँस...

केल्विनेटर के मजदूर हाल ही में मिनी एग्रीमेन्ट द्वारा तय स्पेशल अलाउन्स से कुछ ज्यादा ही खुश हैं। ठीक है। आगे ही अत्याधिक वर्क लोड से पीड़ित केल्विनेटर वरकरों पर इसी एग्रीमेन्ट द्वारा वर्क लोड बढाया गया है, 1900 की बजाय 2400 फ्रिज प्रतिदिन। क्या बढे वर्क लोड के बारे में भी केल्विनेटर वरकर चर्चायें कर रहे हैं? या, यह चर्चा के लायक विषय नहीं है? क्या वर्क लोड मजदूरों के लिये कोई बेमतलब की चीज होती है?

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73